वृत्तपत्राचे नांव :— स्वतंत्रवार्ता

वृत्तपत्र प्रकाशनाचे ठिकाण :— हैद्राबाद

वृत्तपत्र पान क :— 5

दिनांक :—27 / 04 / 2004

सद्ज्ञान-सद्भाव का प्रतीक-स्वस्तिक

ॐ स्वस्ति नऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः
स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः
स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥

यजुर्वेद की इस कल्याणकारी एवं मंगलकारी शुभकामना, स्वस्तिवाचन में स्वस्तिक का निहितार्थ छिपा है। हर मंगल एवं शुभ कार्य में इसका भाव भरा वाचन किया जाता है, जिसे स्वस्तिवाचन कहा जाता है। स्वस्तिक संस्कृत के स्वस्ति शब्द से विनिर्मित है। स्व और अस्ति से बने स्वस्ति का अर्थ है- कल्याण। यह मानव, समाज एवं विश्व के कल्याण की भावना का प्रतीक है। 'वसोमम' - मेरा कल्याण करो का भी यह पावन प्रतीक है। इसे शुभकामना, शुभभावना, कुशलक्षेम, आशीर्वाद, पुण्य, पाप-प्रक्षालन तथा दान स्वीकार करने के रूप में भी प्रयोग-उपयोग किया जाता है।

स्वस्तिक अतिप्राचीन पुण्य-प्रतीक है, जिसमें अतिगूढ़ अर्थ एवं निगूढ रहस्य छिपा है। इसके अनेकानेक अर्थ हैं। हलायुध कोश में इसे 'चतुर्विंशतिचिह्नान्तर्गतचिह्न- विशेष' कहा गया है अर्थात संस्कृति के चौबीस चिह्नों में से यह एक विशेष एवं दिव्य चिह्न है। हलायुध कोश में इसका तात्पर्य चतुष्पथ याने चौराहे से भी लिया गया है। गणपति के गं बीजाक्षर का चिह्न भी स्वस्ति जैसा प्रतीत होता है। इसके रूप एवं समूचे मंत्र का स्वरूप स्वस्तिक का आकार ग्रहण करता है। अतः यह चतुष्टय का चिह्न भी है, जो प्राचीन तथा अर्वाचीन मान्यता के अनुसार सूर्यमंडल के चारो ओर चार विद्युत केन्द्र के समान लगता है। इसकी पूरब दिशा में वृद्धश्रवा इंद्र, दक्षिण में बृहस्पति इंद्र, पश्चिम में पूषा-विश्ववेदा इंद्र तथा उत्तर दिशा में अरिष्टनेमि अवस्थित हैं।

वाल्मीकि रामायण में भी स्वस्तिक का उल्लेख मिलता है। इसके अनुसार सांप के फन के ऊपर स्थित नीली रेखा भी स्वस्तिक का पर्याय है। तंत्रालोक में आचार्य अभिनव गुप्त ने इसे इस तरह स्पष्ट किया है-

पृथक्पृथक्त्रियं सूक्ष्मित्यभिशब्दयते।
षड्जं करोमि मधुरं वादयामि ब्रुवे वचः॥

नादब्रह्म से अक्षर तथा वर्णमाला बनी, मातृका की उत्पत्ति हुई। नाद से ही पश्यंती, मध्यमा तथा वैखरी वाणियां उत्पन्न हुई। तदुपरांत उनके भी स्थूल तथा सूक्ष्म, दो भाग बने। इस प्रकार नाद सृष्टि के छह रूप हो गए। इन्हीं छह रूपों में, पंक्तियों में स्वस्तिक का रहस्य छिपा है। अतः स्वस्तिक को समूचे नादब्रह्म तथा सृष्टि का प्रतीक एवं पर्याय माना जा सकता है।

वैखरी वाणी का विश्लेषण करने पर पता चलता है कि यह स्वर तथा व्यंजन, दोनों में विभक्त है। स्वर छह होते हैं। इन्हीं को सूर्य की छह रश्मियों को षड्देवतात्मकं सूर्यरश्मित्वम् के रूप में देखा जाता है और इन्हीं छह रश्मियों को स्वस्तिक कहा जाता है।

स्वस्तिक को रचना के आधार पर देखा जाए तो यह अबाहु तथा सुबाहु नामक दो स्वस्तिक के रूप में परिलक्षित होता है। अबाहु स्वस्तिक वामावर्त तथा सुबाहु स्वस्तिक दक्षिणावर्त होता है। इसलिए सुबाहु स्वस्तिक को सूर्य का प्रतीक माना जाता है क्योंकि सूर्य सदैव उत्तरी गोलार्द्ध में पूरब से निकलकर दक्षिण-पश्चिम होता हुआ उत्तर में पहुंचता है और प्रत्येक सुबह फिर पूर्व से उदय होता है, अतः सूर्य की चार दिशाओं में स्वस्तिक की चार भुजाओं का बोध होता है।

प्राचीन भारत में स्वस्तिक के चित्रण -अंकन का दिग्दर्शन प्रागैतिहासिक काल के शैलचित्रों में होता है। इससे स्पष्ट होता है कि पूर्ण या सुबाहु स्वस्तिक का विकास-विस्तार मूलतः अबाहु से हुआ है। शैलचित्रों में स्वस्तिक का प्रमाण पूजा-प्रसंगों के साथ-साथ स्वतंत्र रूप से भी किया गया है। इसके पुरातात्त्विक प्रमाण सिंघनपुर-रायगढ क्षेत्र, बनिया बेरी पंचमढी क्षेत्र, चंबल क्षेत्र तथा सागर-भोपाल क्षेत्र में स्थित गुफाओं से मिलते हैं, जिनमें सुबाहु और अबाहु स्वस्तिक का अंकन हुआ है। सिंधु-सभ्यता की मुहरों-सिक्कों में- स्वस्तिक के दक्षिणावर्त रूप के साथ ही वामावर्त रूप भी मिलता है। उन दिनों दोनों ही प्रकार के स्वस्तिकों को शुभ एवं मंगलमय माना जाता था, परंतु आज दक्षिणावर्त स्वस्तिक ही पुण्य कार्यों में प्रयुक्त होता है तथा तंत्र व यंत्र आदि में वामावर्त स्वस्तिक का प्रयोग किया जाता है।

भारतीय दर्शन के अनुसार स्वस्तिक की चार रेखाओं की तुलना चार वेद, चार पुरुषार्थ, चार वर्ण, चार आश्रम, चार लोक तथा चार देवों अर्थात ब्रह्मा, विष्णु, महेश तथा गणेश से की गई है। प्रतीकात्मक विचार के इन सूत्रों में स्वस्तिक चतुर्दल कमल का सूचक भी माना गया है। अतः यह गणपति देव का निवासस्थान भी है। इसी तथ्य को मूर्द्धन्य मनीषी पं. रामचंद्र शास्त्री ने भी स्वीकार किया है। इन्होंने भी कमल को स्वस्तिक का ही पर्याय माना है इसलिए कमल का प्रतीक भी स्वस्तिक हो गया और इसे भी मंगल व पुण्यकर्म में प्रयुक्त किया जाने लगा। कुछ विद्वान कमलापति भगवान विष्णु के वक्षस्थल पर विद्यमान कौस्तुभ मणि को स्वस्तिक के आकार रूप में मानते हैं।

श्रीमती मरे ने 'सिंबोलिजम्म ऑफ दि ईस्ट एंड वेस्ट' नामक ग्रंथ में प्रतिपादित किया है कि वैदिक प्रतीकों में गहन-गंभीर एवं गूढ अर्थ निहित हैं। यही प्रतीकों में गहन-गंभीर एवं यही प्रतीक संसार के विभिन्न धर्मों में भिन्न-भिन्न ढंग से परिलक्षित-प्रकट होते हैं तथा देश-काल-परिस्थिति के अनुरूप इनके स्वरूपों में रूपांतर एवं परिवर्तन होता रहता है। अतः स्वस्तिक प्रतीक की गति-प्रगति की एक अत्यंत समृद्ध परंपरा है।

जैन धर्म में स्वस्तिक उनके सातवें तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ के प्रतीक चिह्न के रूप में लोकप्रिय है। जैन अनुयायी स्वस्तिक की चार भुजाओं को संभावित पुनर्जन्मों के स्थल-स्थानों के रूप में मानते हैं। ये स्थल हैं-वनस्पति या प्राणिजगत, पृथ्वी, जीवात्मा एवं नरक। बौद्ध मठों में भी स्वस्तिक का अंकन मिलता है। जार्ज बर्डउड ने बौद्धों के धर्मचक्र को, यूनानी क्रास को तथा स्वस्तिक को सूर्य का प्रतीक माना है। उनके अनुसार यह अत्यंत प्राचीनतम प्रतीक है, जिसमें गहन अर्थ निहित है। तिब्बत के लामाओं के निवासस्थान तथा मंदिरों में स्वस्तिक की आकृति बनी हुई मिलती है।

इस संदर्भ में अगाध संस्कृतप्रेमी तथा पश्चिमी ऋषि प्रो. मैक्समूलर का एक पत्र बड़ा उपयोगी एवं प्रासंगिक है। उन्होंने डॉ. श्लोमन को लिखे एक पत्र में बड़े युक्तिपूर्ण ढंग से स्पष्ट किया है कि इटली के हर कोने में, मिलान, रोम, पॉम्पिया, इंग्लैंड के नारफाक नगर हंगरी, यूनान, चीन आदि हर देश-नगर में स्वस्तिक पाया जाता है।

मैक्समूलर ने ई. थामस के इस अनुसंधान-अन्वेषण को भी उचित एवं उपयुक्त ठहराया है, जिसमें थामस ने स्वस्तिक को गतिशील सूर्य का प्रतीक माना है।

मैक्समूलर के मतानुसार स्वस्तिक अनेक रूपों में अनेक देशों में प्रचलित था तथा इसका निरंतर उपयोग होता था। सैकड़ों वर्ष पूर्व इंग्लैंड में स्वस्तिक का प्रयोग हुआ था। फिर डेनमार्क, नार्वे, स्वीडन आदि देशों में इसकी आकृति परिवर्तित होती गई। आर्थोडाक्स ईसाई चर्चों में स्वस्तिक का प्रचलन था। वहां पर स्वस्तिक का उलटा रूप मिलता है, जो भारतीय स्वस्तिक दायें से बायें के ठीक विपरीत बायें से दायें चलता है। हिटलर ने इसी उलटे प्रतीक को मान्यता दे रखी थी। स्वीडन में स्वस्तिक क्रास के रूप में मिलता है, जिसके चारों ओर गोलाई बनी हुई है।

डी. ए. मैकेंजी के मतानुसार यह प्रतीक चिह्न विभिन्न रूपों में विभिन्न अर्थों में प्रयोग होता है। उनका मानना है कि इसे प्रजनन-प्रतीक, उर्वरता-प्रतीक, पुरातन व्यापारिक चिह्न, अलंकरण-अभिप्राय, अग्नि, विद्युत, वज्र, जल आदि का सांकेतिक स्वरूप, ज्योतिष प्रतीक, उड़ते हुए पक्षी आदि अन्यान्य रूपों में माना गया है। एक अन्य प्रसिद्ध पाश्चात्य मनीषी ने बड़ी ही उदारतापूर्वक स्वीकार किया है कि ऋषियों एवं विद्वानों के आर्यस्थल वैदिक भारत में जिस मंगलदायक एवं शुभसूचक स्वस्तिक की कल्पना की गई थी, वही अन्यान्य रूपों में विश्व की अन्य सभ्यताओं द्वारा अपना ली गई है, उसे मान्यता प्रदान कर दी गई है। उनके विचार से ऋषि-संस्कृति में ऐसे दिव्य, उदात्त एवं समग्र प्रतीकों का होना संभव है, जिनका प्रवाह संस्कृति के समान चिरंतन, शाश्वत और सनातन है। अतः स्वस्तिक रूपी इसी संकेत में सद्भावना का सजल भाव ही नहीं है, वरन् सद्ज्ञान व सद्विचार का संपुट भी लगा हुआ है।

स्वस्तिक अपने अंदर न जाने कितने गूढ भावों और विचार सूत्रों को संजोए-पिरोए हुए है। इन भावों और विचारों के मूल में झांकने पर हरेक व्यक्ति, समाज, राष्ट्र व संपूर्ण विश्व के लिए परम कल्याणकारी भावना ही अंतर्निहित हुई प्रतीत होती है। इसमें वैयक्तिक विकास व विस्तार के साथ ही समाज की प्रगति एवं विश्वकल्याण की अनंत संभावनाएं-सन्निहित हैं। आवश्यकता है एक ऐसी दृष्टि की, जो इससे साक्षात्कार कर सके और सहज-सरल रूपों में इस प्रतीक की शुभभावना को अभिव्यक्तकर सके। यदि हम अपने जीवन में इस प्रतीक को उतार सकें, इससे हम जुड सकें तो हमारा जीवन भी कल्याणकारी हो जाएगा और हमारे जीवन में सद्कर्म ए सद्भावों की सुगंध बिखर जाएगी। इस मंगलम प्रतीक को हमें अपने जीवन का अंग बना चाहिए, जिससे हमारे विचार व भाव मंगल एवं कल्याणकारी बन सकें।

भारतीय दर्शन के अनुसार स्वस्तिक की चार रेंखाओं की तुलना चार वेद, चार पुरुषार्थ, चार वर्ण, चार आश्रम, चार लोक तथा चार देवों अर्थात ब्रह्मा, विष्णु, महेश तथा गणेश से की गई है। प्रतीकात्मक विचार के इन सूत्रों में स्वस्तिक चतुर्दल कमल का सूचक भी माना गया है। अतः यह गणपति देव का निवासस्थान भी है। स्वस्तिक अपने अंदर न जाने कितने गूढ़ भावों और विचार सूत्रों को संजोए-पिरोए हुए है। इन भावों और विचारों के मूल में झांकने पर हरेक व्यक्ति, समाज, राष्ट्र व संपूर्ण विश्व के लिए परम कल्याणकारी भावना ही अंतर्निहित हुई प्रतीत होती है।